''उत्तर प्रदेश की राजनीति में लघु एवं सीमांत दलों की भूमिकाः 2007 के पश्चात्''

शोध–सारांश

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय की राजनीति विज्ञान विषय में पीएच0डी0 उपाधि हेतु

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

शोधार्थी

अभिषेक कुमार

नामांकन संख्याः 1375/16

शोध निर्देशक

प्रो. शशिकांत पाण्डेय

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

राजनीति विज्ञान विभाग

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025

उत्तर प्रदेश, भारत

2022

शोध–सारांश

प्रस्तावना

भारतीय संघीय व्यवस्था मे बहुलवाद व विकेन्द्रीकरण सम्बन्धी प्रवृत्तियॉ व्यापक स्तर पर विद्यमान है। उत्तर प्रदेश भी अपने लघु रूप में भारतीय राजनीति का प्रतिनिधित्व करता है। अखिल भारतीय राजनीति के सदृश्य विविधता की झलक हमें उत्तर प्रदेश में देखने को मिलता है। स्वतन्त्रता काल से ही यह राज्य भारतीय राजनीति के लिए निर्णायक रहा है। इसलिए विभिन्न विद्वानों ने इसे भारतीय राजनीति का केन्द्र बिन्दु या हृदय स्थल कहा है।

उत्तर प्रदेश स्वतन्त्रता के बाद से लेकर आज तक विभिन्न तरह की राजनीति का प्रयोग स्थली रहा है। उत्तर प्रदेश की राजनीति 1947 से लेकर 1989 तक कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में लगभग एक दलीय प्रधान पद्धति का अनुसरण करती रही है। लेकिन उसके बाद उत्तर प्रदेश की विविधता युक्त समाज को राजनीतिक इकाई के रूप में एकजुट रख पाना कांग्रेस पार्टी के लिए संभव नही रहा अर्थात् गठबंधन की राजनीति का उदय हुआ। सन् 1990 का दशक उत्तर प्रदेश की राजनीति के लिए स्पष्ट रूप से परिवर्तन का दशक रहा। इन्हीं वर्षो में उत्तर प्रदेश में सामाजिक न्याय के आधार पर समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का गठन मण्डल कमीशन का लागू होना, नवीन आर्थिक नीतियों का समावेशन तथा हरित क्रान्ति का प्रभाव, संचार क्रान्ति के माध्यम से जनचेतना का उभार इन सभी सम्मिलित कारणों ने राज्य की राजनीति को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया। उत्तर प्रदेश के वे मतदाता जो परम्परागत रूप से क्रांग्रेस पार्टी के पक्ष में वोट करते आ रहे थे, वह अब सपा व बसपा के पक्ष में लामबन्द होने लगे। समाजवादी पार्टी ने जहॉ पिछड़े, अति पिछड़े व मुस्लिम समुदाय को अपने पक्ष में लामबन्द किया, वही बहुजन समाज पार्टी ने दलितों व अल्पसंख्यकों को अपने पक्ष में संगठित किया। लेकिन सामाजिक न्याय की विचारधारा एवं उद्देश्यों को लेकर सत्ता में आई सपा व बसपा अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा पिछड़ों, अतिपिछड़ो एवं अल्पसंख्यक आदि वर्गों को शासन सत्ता में समुचित भागीदारी देने

में विफल रहे। इन दलों पर कुछ जातियों का पक्ष लेने का आरोप भी लगता रहा। परिणाम स्वरूप इन दलों में उपेक्षित महसूस कर रहे वर्गों ने विभिन्न आधारों पर अनेक छोटे–छोटे लघु एवं सीमान्त या स्थानीय राजनीतिक दलों का गठन किया। लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल प्रदेश के विभिन्न अंचलों में सक्रिय है, इन दलों का राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र सामान्यतः कुछ जनपदों तक सीमित होता है। ये दल अपने–अपने वर्गों एवं समुदायों को वोट की ताकत एवं अहमियत समझाते हुए उन्हें वोट बैंक के रूप में लामबन्द कर बड़े दलों से मतों का सौदेबाजी कर शासन, सत्ता में भागीदारी करने का प्रयास करते रहे है। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2007 के पश्चात् राज्य की राजनीति में लघु एवं सीमांत दलों की भूमिका निरन्तर बढ़ी है। राज्य के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में कोई भी राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय दल इनकी भूमिका एवं महत्व को नजर अन्दाज नही कर सकता।

''उत्तर प्रदेश की राजनीति में लघु एवं सीमांत दलों की भूमिकाः 2007 के पश्चात्'' नामक इस शोध प्रबन्ध में शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश की राजनीति में लघु एवं सीमांत दलों का अध्ययन विभिन्न आयामों से उपर्युक्त शीर्षक के अन्तर्गत किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिससे विश्लेषणात्मक व आनुभविक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

शोघ प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में उत्तर प्रदेश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक आयामों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया गया है। उत्तर प्रदेश का भारतीय संघीय व्यवस्था की केन्द्रीय एवं राज्य विधायिका में सदस्यों की संख्या अन्य राज्यों की अपेक्षा सर्वाधिक है। यह देश की राजधानी के समीप है। इसलिए इस राज्य में वो क्षमता है जिसके आधार पर यह देश की राजनीति को प्रभावित करती रही है। इन बिन्दुओं का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। यह राज्य प्रत्येक तरह की राजनीति से संचालित होता रहा है, चाहे वह मण्डल कमण्डल की राजनीति हो, या जाति, धर्म, सम्प्रदायिकता, क्षेत्र, उपक्षेत्र की यहा सबका समावेश देखने को मिलता है। यह लघु रूप में देश के समान विविधता वाला राज्य है।

राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय दल विभिन्न वर्गो की आकांक्षाओं, अपेक्षाओं को संतुष्ट नही कर पाए। इन दलों की दुर्बलताओं के कारण विभिन्न जातियों एवं समुदायों का बिखराव हुआ जिससे विभिन्न लघु एवं सीमांत दलों का उदय हुआ। प्रदेश की राजनीति में इन दलों की भूमिकाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इस अध्याय में राज्य राजनीति के इन पहलुओं पर सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में शोध परिकल्पना, शोध उद्देश्य तथा शोध पद्धति के बारे में बताया गया है। इस शोध प्रबन्ध में प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त आकड़ों का उपयोग किया गया है।

शोध उद्देश्य–

1. लघु एवं सीमान्त या स्थानीय दलों का अध्ययन करना।
2. इन दलों का उद्देश्य, संचालित करने की रणनीति एवं संगठन का अध्ययन करना।
3. जातियों की बदलती प्रकृति को समझना, जिससे कि क्षेत्रीय दलों के बिखराव को समझा जा सके।
4. राजनीतिक व्यवस्था एवं राजनीति की प्रकृति पर जातिगत बिखराव के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. राज्य की राजनीति एवं सरकार निर्माण पर लघु एवं सीमांत दलों के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न–

1. उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत दलों का क्या अर्थ है?
2. लघु एवं सीमांत दलों का क्या कोई वैचारिक आधार भी होता है अथवा केवल जातिगत समीकरण के आधार पर चुनाव लड़ते हैं?
3. इन दलों का वास्तविक उद्देश्य चुनाव लड़ना भी होता है अथवा कुछ और?
4. ऐसे राजनीतिक दल अपना चुनाव प्रबन्धन कैसे करते हैं?
5. ऐसे दलों के चुनाव लड़ने से लोकतन्त्र पर क्या प्रभाव पड़ता है?
6. छोटे एवं सीमान्त दलों का क्या कोई गुप्त एजेंडा होता है।?

7. छोटे एवं सीमान्त दल व्यक्तित्व आधारित होते हैं या फिर किसी नीति पर आधारित होते हैं?

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आनुभविक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसके लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श (Purposive Sampling) का उपयोग किया गया है। इसमे प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत आकड़ों के संग्रहण हेतु सम्बन्धित राजनीतिक दलों के महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों एवं शीर्ष नेतृत्व से प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त किया गया है। द्वितीयक स्त्रोत के अन्तर्गत अध्ययन से सम्बन्धित पुस्तकें, लेख, पत्र–पत्रिकाएं, रिपोर्ट, जनगणना एवं वेबसाइटों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के दृष्टिगत उपरोक्त वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियों के आधार पर उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत दलों की भूमिका का समग्र, वस्तुनिष्ठ, निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत करने का प्रयास किया गया है।

परिकल्पना–

1. जातिगत व्यवस्था में बिखराव के परिणामस्वरूप लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों का अभ्युदय हो रहा है।
2. लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों का उद्देश्य एवं विचारधारा सामाजिक न्याय से प्रभावित है।
3. बड़े दलों के साथ गठजोड़ कर चुनाव लड़ने से लघु एवं सीमांत दल निर्णायक भूमिका मे आ जाते हैं।

द्वितीय अध्याय – क्षेत्रीय, लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल : सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण

शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में राजनीतिक दलों की विभिन्न परिभाषाओं का उल्लेख किया गया है। राजनीतिक दलों से संबंधित विभिन्न सिद्धान्तकारों –एलेन बाल, ज्योवानी, सारटोरी, मॉरिस डुवर्जर, क्रिस्टोफर जेफरलो, एस.एम. लिप्सेट व रोक्कन आदि के सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है।

भारतीय राजनीति विज्ञानियों सुहास पालशिकर, रजनी कोठारी, सुधा पाई, योगेन्द्र यादव के लघु एवं सीमान्त या स्थानीय राजनीतिक दलों के सन्दर्भ मे प्रस्तुत किये गये दृष्टिकोणों का विश्लेषण किया हैं।

इसी अध्याय में दलीय व्यवस्था के विभिन्न प्रकार, जिसके अन्तर्गत एक दलीय, द्विदलीय, बहुदलीय तथा बहुदलीय में एक दल प्रभुत्ववादी व्यवस्था का वर्णन किया गया है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है और एक सफल लोकतन्त्र के लिए राजनीतिक दलों का अस्तित्व अपरिहार्य है। भारत में बहुदलीय राजनीतिक व्यवस्था अपनाया गया है। इस अध्याय में भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय व लघु एवं सीमांत या स्थानीय राजनीतिक दलों के उदय के दृष्टिकोणों का विश्लेषण दो भागों में बॉट कर देखा गया है, पहला–स्वतंत्रता पूर्व में क्षेत्रीय व लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल दूसरा–स्वतंत्रता के बाद क्षेत्रीय व लघु एवं सीमांत राजनीतिक

दल। स्वतंत्रता के बाद इन दलों को विभिन्न कालक्रमों में बॉट कर देखा गया है। तथा भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर इन दलों के प्रभाव का अवलोकन किया गया है। उत्तर प्रदेश सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा क्षेत्रगत आधार पर विविधतापूर्ण प्रदेश है। यहा विभिन्न आधारों पर निर्मित क्षेत्रीय व लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल पाए जाते है। इन दलों के वर्गीकरण के आधारों का उल्लेख किया गया है। अतः इस अध्याय मे उपर्युक्त संदर्भो का सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय तृतीय– पहचान आधारित राजनीति : उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में

शोध के तृतीय अध्याय में पहचान की राजनीति से संबंधित विविध आयामों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। पहचान की राजनीति सामान्यतः एक राजनीतिक दृष्टिकोण का लोग आते है जो प्रायः जाति, धर्म, भाषा, विचारधारा या अन्य पहचान आधारित कारकों के आधार पर राजनीतिक एजेण्डा विकसित करते है और शोषण, उत्पीड़न के इण्टरलॉकिंग सिस्टम के आधार पर व्यवस्थित होते है जो उनके जीवन को प्रभावित करते है और उनकी पहचान में आते है।

जब समाज के पिछड़े हुए व्यक्तियों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए उनका राजनीतिक रुप से ध्रुवीकरण किया जाता है, तो वहॉ पर पहचान की राजनीति का उदय होता है। पहचान की राजनीति सामान्यतः देश, राज्य या समाज के सम्पूर्ण हित को छोड़कर उस समुदाय की बात करते है, जिनके वे स्वयं सदस्य होते है।

इस अध्याय में भारत एवं विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में पहचान की राजनीति के उद्भव, विकास तथा उसके मुख्य आधारों का संक्षिप्त एवं सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। पहचान की राजनीति के विभिन्न आधारों जैसे–जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, लिंग, आदि को विस्तारपूर्वक रेखांकित किया गया है। इस अध्याय में प्रदेश की पहचान आधारित राजनीतिक दलों की भूमिका तथा उनके द्वारा सत्ता एवं पहचान के लिए किए जाने वाले संघर्षो आदि का उल्लेख किया गया है। इस

प्रकार पहचान आधारित राजनीति ने राज्य की राजनीति को पिछले कुछ दशकों से व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है।

अध्याय चतुर्थ – उत्तर प्रदेश के लघु एवं सीमान्त राजनीतिक दल : एक अध्ययन

शोध प्रबन्ध के अध्याय चार के अन्तर्गत, उत्तर प्रदेश के लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों के अध्ययन का संक्षिप्त एवं सारगर्भित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में क्षेत्रीय एवं लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों द्वारा देश की संघीय व्यवस्था को व्यावहारिक स्तर पर प्रभावित करने सम्बन्धी विवरण प्रस्तुत किया गया है। इन दलों ने स्थानीय स्वायत्तता व राष्ट्रीय एकता, अखण्डता के मध्य समुचित समन्वय स्थापित कर हमारी संघीय व्यवस्था को और अधिक लोकतांत्रिक व समावेशी बनाने में अहम योगदान दिया आदि के सम्बन्ध में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत दलों की स्थिति तथा उसकी प्रभाविता संबंधी विवरण प्रस्तुत किया गया है। उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों के उदय के विभिन्न कारणों एवं विचारधारा तथा उनके कार्यक्रमों का इस अध्याय में गहन एवं सारगर्भित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय पंचम–उत्तर प्रदेश के लघु एवं सीमान्त दलों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि : ऑकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध अध्ययन का पंचम अध्याय उत्तर प्रदेश के लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित आकडों के विश्लेष्णात्मक अध्ययन पर आधारित है। इसके लिए आकड़ों का संकलन प्रमुख रूप से भारत एवं उत्तर प्रदेश की जनगणना, जिला सांख्यिकीय विभाग व राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण का प्रतिवेदन तथा अन्य संबंधित सरकारी विभागों की वेबसाइटों से किया गया है।

इस अध्याय में शोध अध्ययन से संबंधित लघु एवं सीमान्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न चुनाव क्षेत्रों से प्रश्नावली सूची के माध्यम से एक सौ चार उत्तरदाताओं से साक्षात्कार करके इन दलों के विविध

आयामों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श (Purposive Sampling) के आधार पर किया गया है।

इस अध्ययन में कुल प्रतिदर्श की संख्या एस सौ चार है जिसमें पुरूष 76 व महिला 28 है। जिसमें सामान्य वर्ग के 15, पिछड़े वर्ग के 54, अनुसूचित जाति के 26 तथा 9 अल्पसंख्यक वर्ग के उत्तरदाता शामिल है।

इसी अध्याय में उत्तर प्रदेश के लघु एवं सीमान्त राजनीतिक दल विशेष रूप से अपना दल व सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के विविध पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर तालिका व ग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया है।

प्रश्नावली से प्राप्त जानकारी के आधार पर शोध अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं की पुष्टि इस निष्कर्ष अध्याय में किया गया है।

शोध प्रबन्ध की पहली परिकल्पना है कि जातिगत व्यवस्था में बिखराव में परिणामस्वरूप लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों का अभ्युदय हो रहा है, सही सिद्ध पाई गई। उत्तर प्रदेश में विभिन्न आधार पर व्यापक स्तर पर विविधता पाई जाती है। विकास में क्षेत्रीय, उपक्षेत्रीय, स्तर पर असन्तुलन देखने को मिलता है। व्यापक स्तर पर सामाजिक स्तरीकरण एवं विभिन्न स्थानीय राजनीतिक मुद्दे आदि सम्मिलित कारण एवं मुद्दों की वजह से राज्य में सक्रिय राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय राजनीतिक दल सामाजिक न्याय के आधार पर शासन सत्ता के लाभों का समावेशी वितरण करने तथा विभिन्न जातीय समूहों की आकांक्षाओं को पहचानने एवं समायोजित करने में असफल रहे, जिससे जातीय बिखराव हुआ तथा अपनी–अपनी अस्मिता हेतु राज्य में अनेक लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों का उदय हुआ। शोध ग्रन्थ के अध्याय पांच के तालिका संख्या 5.23 एवं 5.24 से स्पष्ट है कि विभिन्न जातियों में बिखराव के कारण उत्तर प्रदेश के विभिन्न अंचलो में अनेक लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों का गठन हुआ है। तालिका संख्या 5.32 से स्पष्ट है कि 77.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल, राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय दलों के जातीय समीकरण के लिए चुनौती उत्पन्न कर रहे

है। अतः उपर्युक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों के उदय में जातीय बिखराव एक महत्वपूर्ण कारक है।

शोध प्रबन्ध की दूसरी परिकल्पना है कि लघु एंव सीमांत राजनीतिक दलों का उद्देश्य एवं विचारधारा सामाजिक न्याय से प्रभावित है, सिद्ध पायी गई है। इस परिकल्पना में दो कारक निहित है—पहला इन दलों का उद्देश्य तथा दूसरा उनकी विचारधारा। शोध ग्रन्थ के अध्याय पांच की तालिका संख्या 5.20 तथा 5.21 इन दलों के उद्देश्यों पर आधारित है। जिसके आंकड़ों से स्पष्ट है कि 61.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का माना है कि लघु एवं सीमांत दलों का उददे्श्य शासन सत्ता में भागीदारी करना है। इसी अध्याय की तालिका संख्या 5.22 इन दलों की विचारधारा से संबंधित है जिसके आंकड़ों से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 51.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि इन दलों की विचारधारा मुख्य रूप से सामाजिक न्याय पर आधारित है। अतः उपर्युक्त तथ्यों एवं आंकड़ो से स्पष्ट है कि इन दलों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक न्याय पर आधार शोषित, वंचित वर्गो के शासन, सत्ता में भागीदारी दिलाना है।

शोध की तीसरी और अन्तिम परिकल्पना है कि राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों के साथ गठजोड़ कर चुनाव लड़ने से लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल निर्णायक भूमिका में आ जाते है, भी सही सिद्ध पायी गयी। शोध ग्रन्थ के अध्याय पांच के तालिका संख्या 5.25 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 33.7 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल जब राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय दलों से गठबन्धन कर चुनाव लडते हैं तो वे निर्णायक भूमिका में आ जाते है। क्योंकि ये दल किसी क्षेत्र विशेष व वर्ग विशेष के मतदाताओं पर खासा प्रभाव रखते है तथा जिन राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय या अन्य दलों के साथ गठजोड़ कर चुनाव लड़ते हैं, उन दलों के पक्ष में इन लामबंद मतों को स्थानान्तरित कराने की क्षमता रखते है। जिससे सम्बंधित गठबन्धन के चुनाव जीतने की सम्भावना बढ़ जाती है जिसमें स्पष्ट रूप से लघु एवं सीमांत दलों की निर्णायक भूमिका होती है। अतः उपर्युक्त तथ्यों एवं आंकड़ों से स्पष्ट है कि जब

लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल बड़े दलों से गठजोड़ कर चुनावी प्रतियोगिता में हिस्सेदारी करते है, तो व निर्णायक भूमिका मे होते है।

निष्कर्षतः उपर्युक्त तथ्यों एवं आंकड़ों से स्पष्ट है कि शोध प्रबन्ध की सभी तीन परिकल्पनाऐं सत्य सिद्ध पायी गई है। अंततः शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुॅचता है कि राज्य की राजनीति को लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों ने पिछलें कुछ दशकों में निर्णायक रूप से प्रभावित किया है जिसके अपने सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू विद्यमान है। इन दलों ने जहॉ पहचान आधारित राजनीति के माध्यम से राज्य विधायिका को विविधताओं में एकता से सम्पन्न किया, जिससे राज्य में सामाजिक न्याय एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों को बढ़ावा मिला। वही जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, उपक्षेत्र आदि पहचान की राजनीति ने प्रायः सामाजिक बिखराव को बढ़ावा दिया। इस प्रकार लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों ने राज्य की राजनीति को दोनों तरह से प्रभावित किया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित मुख्य शोध निष्कर्ष उभर कर सामने आये हैः

- उत्तर प्रदेश के लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों की प्रदेश की एकता एवं स्थानीय संतुलन स्थापित करने में अहम भूमिका रही हैं।
- लघु एवं सीमांत तथा क्षेत्रीय दलों ने भारतीय संघीय व्यवस्था का और अधिक संघीयकरण किया है।
- इन दलों की संघीय सरकार में सहभागिता से टकराव एवं मांगों में कमी आयी है क्योंकि शासन में सहभागी होने के कारण संघीय सरकार के सहयोग की नीति अपना रहे है।
- भारतीय लोकतान्त्रिक प्रणाली ने पहचान आधारित राजनीति को बढ़ावा दिया है। यदि लोकतन्त्र को मजबूत करने के नजरिये से देखा जाए तो इसे सकारात्मक बदलाव के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि इससे व्यापक स्तर पर प्रतिनिधित्व मिलता है।

- उत्तर प्रदेश में इन दलों की भूमिका एवं प्रभाव में वृद्धि से राज्य की विधायिका विविधताओं में एकता से सम्पन्न हुई है तथा राज्य में लोकतन्त्र मजबूत हुआ हैं। स्थानीय स्तर पर इन दलों ने जनता को राजनीतिक रूप से सक्रिय बनाने तथा भागीदारी सुनिश्चित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन किया है।
- उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों की सक्रिय भूमिका से प्रायः ऐसी जातियां जो शासन सत्ता में स्वयं को उपेक्षित महसूस करती रही है, उन्हें इन दलों के माध्यम से निर्णय–निर्माण संस्थाओं में प्रतिनिधित्व मिला और परम्परागत आधार पर प्रभावशाली जातियों के वर्चस्व को कमजोर किया।
- राज्य में लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों की भूमिका एवं प्रभाव बढ़ने से शासन–प्रशासन द्वारा स्थानीय मुद्दों पर प्रायः अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।
- लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल बिखरे वोटों को लामबंद कर साबूत वोट में बदल देने की क्षमता रखते है। जिन वोटों का पहले कोई ज्यादा महत्व नही रहता था, उन वोटों के महत्व को इन दलों ने रेखांकित किया है।
- उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत दलों की भूमिका में निर्णायक रूप से वृद्धि हुआ हैं।
- उत्तर प्रदेश में लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों ने पहचान की राजनीति के साथ सुशासन के मुद्दों को भी प्राथमिकता दिया है।
- लघु एवं सीमांत दलों के माध्यम से राज्य विधान सभा में स्थानीय हितो को महत्व।
- बसपा और सपा ने उत्तर प्रदेश में पहचान आधारित लघु एवं सीमांत दलों के अभ्युदय हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान किया।

सुझाव

- उत्तर प्रदेश के सभी क्षेत्रों का समान रूप से विकास नही हुआ है कई क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए है। अतः एक सुसम्बद्ध नीति अपनाने की आवश्यकता है, जिससे राज्य के असन्तुलित विकास को दूर किया जा सके।
- भारत निर्वाचन आयोग को ऐसे लघु एवं सीमांत राजनीतिक दलों की मान्यता समाप्त करनी चाहिए, जो एक सीमा तक चुनावों में मत प्राप्त करने मे असफल रहे।
- जब देश की विविधता के दृष्टिगत त्रिस्तरीय संवैधानिक सरकारों का प्रावधान हो सकता है तो त्रिस्तरीय राजनीतिक दल क्यों नही।
- लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल सामान्यतः स्थानीय मुद्दों, वर्ग, समुदाय आदि के हितों के आधार पर बनते है। इसलिए इन्हें केवल विधान सभा व स्थानीय निकाय चुनावों में ही प्रतिभाग करने का अवसर मिलना चाहिए।
- लघु एवं सीमांत राजनीतिक दल सामान्यतः स्थानीय मुद्दों, वर्ग, समुदाय आदि के हितों के आधार पर बनते है। इसलिए ये अखिल भारतीय दृष्टिकोण व विचारधारा नही रखते। इन्हें केवल विधान सभा व स्थानीय पंचायत, निकाय चुनावों में ही प्रतिभाग करने का अवसर मिलना चाहिए, अतः लोकसभा चुनाव से इन दलों को रोकना चाहिए।
- उत्तर प्रदेश भारत का एक विलक्षण प्रदेश है यहॉ कई उप सांस्कृतिक क्षेत्र पाये जाते है। जहॉ तक सम्भव व व्यावहारिक हो शासन, प्रशासन द्वारा उचित आकांक्षाओं की पूर्ति की जाए। यद्यपि कि उनका राष्ट्रीय जीवन व संगठन पर कोई बुरा प्रभाव न पड़ता हो ।

- उत्तर प्रदेश की राजनीति आज भी अधिकांशतः जातिवाद, क्षेत्रवाद, धर्म एवं साम्प्रदायिकता इत्यादि संकीर्ण मुद्दों पर केन्द्रित रहता है। इन मुद्दों का परित्याग करने हेतु भारत निर्वाचन आयोग तथा न्यायालय को सख्त प्रावधान करना चाहिए। जिससे प्रदेश की राजनीति को विकास सम्बन्धी विषयों यथा–शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, बुनियादी संरचना आदि मुद्दों पर केन्द्रित किया जा सके।